ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

Symbol of oneness

DHYAN-KAKSH

SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल

(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

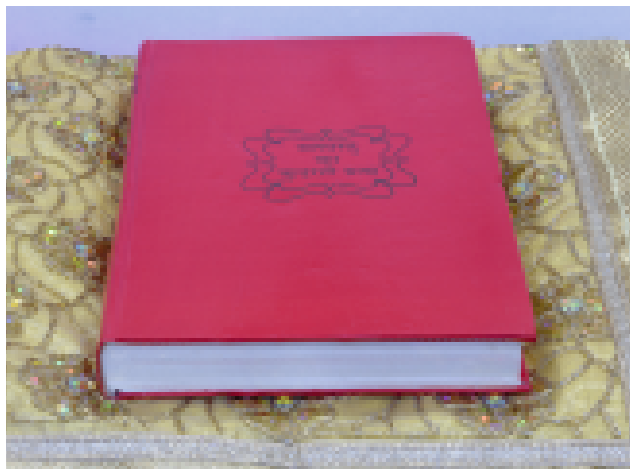

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-58-1

प्रथम संस्करण | जुलाई, 2024

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

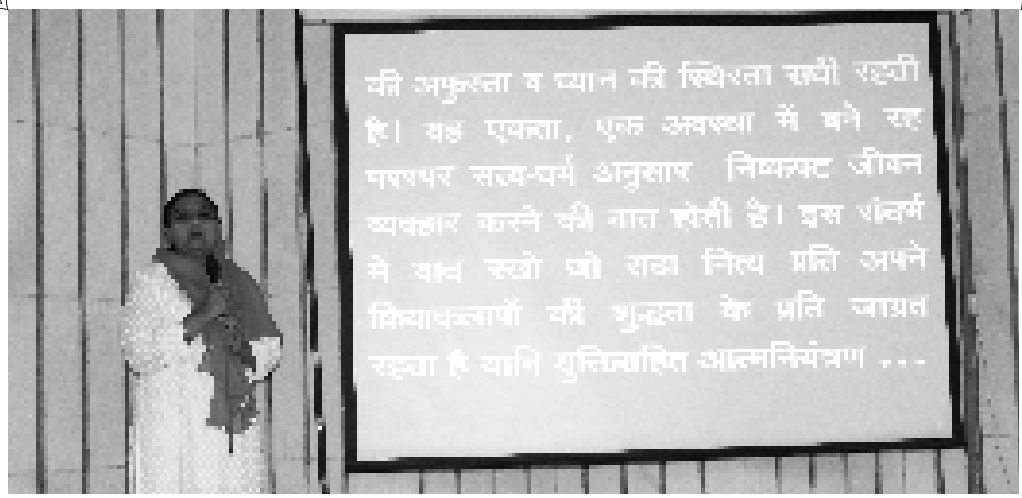

सच्चाई
धर्म
सम

यथार्थ असलियत ब्रह्म स्वरूप की पहचान

आओ आज अपने यथार्थ असलियत ब्रह्म स्वरूप की पहचान करें। इस संदर्भ में सजनों सर्वप्रथम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत इन पंक्तियों को अनुभव करते हुए बोलोः-

ओ३म्
मैं ब्रह्म हूँ
मैं ब्रह्म हूँ
मैं ब्रह्म हूँ
मैं ब्रह्म हूँ
मैं ब्रह्म हूँ
मैं ब्रह्म हूँ
मैं ब्रह्म हूँ

अर्थात् शास्त्र हमें समझा रहा है

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म,
जैंदा रूप रेखा नहीं रंग

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न0 30)

आशय यह है कि रूप, रेखा, रंग रहित, ब्रह्म ही हमारा असलियत/वास्तविक स्वरूप है। यहाँ ब्रह्म से तात्पर्य उस सब में बड़ी, परम तथा नित्य चेतनसत्ता से है जो जगत का मूल कारण और सत्-चित्त-आनंदस्वरूप मानी गई है तथा जिससे बढ़कर व जिसके ऊपर, आगे या अधिक कोई अन्य सत्ता अथवा शक्ति नहीं है। इसलिए तो कहा गया है:-

ब्रह्म पृथ्वी और ब्रह्म ही ओ आकाश हूँ,
ब्रह्म सूरज और चाँद ही ओ प्रकाश हूँ।
ब्रह्म जल और ब्रह्म थल रिहा ओ भास हूँ,
ब्रह्म पवन और पानी में ही ओ निवास हूँ।
ब्रह्म जनचर और ब्रह्म ही ओ बनचर हूँ,
ब्रह्म जड़ और चेतन में ब्रह्म ही ओ निवास हूँ।
ब्रह्म नौखण्ड और ब्रह्म ही ओ सारा ब्रह्मांड हूँ,
ब्रह्म सर्गुण ब्रह्म निर्गुण और ब्रह्म ही ओ इतिहास हूँ।
ब्रह्म द्वीप और ब्रह्म ही ओ भूमण्डल हूँ,
ब्रह्म गगन मण्डल में बिन सूरजों ओ प्रकाश हूँ।
ब्रह्म रूप रंग न रेखा कोई और

ब्रह्म ही ओ आद अंत हूँ,
ब्रह्म जगत और जहान सारा ब्रह्म ही ओ प्रकाश हूँ।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
भाग-3, बुधवार का तीसरा बोर्ड, कीर्तन न0 15)

अर्थात् पृथ्वी-आकाश, सूरज-चाँद, जल-थल, पवन-पानी, जनचर-बनचर, जड़-चेतन, नौखण्ड-ब्रह्मांड सर्गुण-निर्गुण, सप्तद्वीप-भूमण्डल, गगनमण्डल, आद्-अंत, सारा जगत ब्रह्ममय है, ब्रह्म-निर्मित है और ब्रह्म शक्ति यानि ब्रह्मसत्ता से ही चल रहा है। ब्रह्म ही वह बीज है जिससे यह सारा ब्रह्मांड उत्पन्न होता है व फिर जिसमें विलय हो जाता है। इस सत्य को दृष्टिगत रखते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में स्पष्टतया कहा गया है:-

विराट् नगरी उस परम पिता
परमात्मा दे गर्भ में सुहाये।
उदय हुआ फुरना, फुरने दी
सृष्टि प्रकट करके दिखाए।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
भाग-4, कीर्तन न0 14)

सजनों स्पष्ट है चाहे कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण तक सब वस्तुओं के नाम व रूप अनेक हैं, पर उन सब में एक ही चेतन शक्ति/ब्रह्म सत्ता समरूपता से व्याप्त है और वही मेरा असलियत ब्रह्म स्वरूप यानि अपना आप है। आप भी अपने इस इलाही असलियत ब्रह्म स्वरूप का बोध करने हेतु आँखें बंद करके, कुछ देर पूरी श्रद्धा और विश्वास से अफुर होकर प्रसन्नचित्तता से बोलोः-

ब्रह्म स्वरूप है अपना आप,
हम तो हैं ओही प्रकाश।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2,
बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न0 30)

अब जब ध्यानपूर्वक अपने ख्याल को एकाग्रचित्त कर, भीतर ही भीतर यानि अंतर्मन में अपने इलाही असलियत ब्रह्म स्वरूप का बोध कर लिया तो चारों ओर आँखें खोलकर देखो और अनुभव करो कि परब्रह्म परमेश्वर की नित्य ब्रह्म शक्ति ने ही हर अनित्य वस्तु को आत्मा के रूप में धारण किया

OPEN HOUSE
DISCUSSION

हुआ है और विभिन्न रूप, रंगों में मेरा वही ज्योतिर्मय ब्रह्म स्वरूप ही निगाह आ रहा है। अब इस परम सत्य में अपने ख़्याल व ध्यान को स्थित रखते हुए शास्त्र अनुसार मन ही मन गुनगुनाओः-

हम हैं ब्रह्म, तुम हो ब्रह्म हाँ हाँ हाँ हाँ
ब्रह्म स्वरूप ब्रह्माण्ड सारा।
ब्रह्म प्रकाश सारी सगली मानो,
ब्रह्म है जगत जहान सारा।।
ब्रह्म स्वरूप है अपना आप, हाँ हाँ हाँ हाँ
हम तो हैं सारा जग प्रकाश।
ब्रह्म स्वरूप कुल इन्सान,
ब्रह्म प्रकाश सारी सगली मान।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, कीर्तन न0 5)

इस तरह उठते-बैठते, सोते-जागते यानि जीवन के समस्त कार्यव्यवहार समुचित ढंग से सहर्ष करते हुए, सब में उसी ब्रह्मप्रकाश के होने का एहसास करो। कहने का आशय यह है किः-

यानि अन्दर विचरो, बाहर विचरो, घर में हों या बाज़ार में, मन-मन्दिर देखो या जग अन्दर, परिवार वाले देखो या रेहड़ी वाले, बाल-वृद्ध, गरीब-अमीर जो सजन भी आगे आवे, उसको ब्रह्म यानि भगवान का रूप ही समझो और प्रसन्न होवो अर्थात् मन ही मन यह विचार कर हर्षाओ कि हे प्रभु ! तेरे खेल कितने निराले हैं। कितने रूपों में कितनी तरह का खेल, खेल रहे हो और खेल खेलते हुए भी उससे निर्लेप हो। इस तरह जगत के सब दृश्य देखते हुए अपने मन में किसी अन्य प्रकार का विषम भाव पैदा करने के स्थान पर, ब्रह्म भाव का विकास कर हर्षाओ। जानो ऐसा करने से स्वयंमेव **'जो प्रकाश मन-मन्दिर में देखा है, वही प्रकाश सारे जग में दिखाई देगा'** और आप सर्व-सर्व अपने ही प्रकाश का अनुभव कर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार कह उठोगे:-

जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश,
ओही असलियत ब्रह्म स्वरूप है मेरा अपना आप

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
भाग-3, बुधवार का दूसरा बोर्ड, कीर्तन न0 1)

सारतः सजनों हम यही कहेंगे कि समत्वमय ब्रह्म, जो सबमें एकरस निहित है, उसी को अपना असलियत ब्रह्म स्वरूप मानते हुए, सर्व-सर्वत्र उसका बोध करो और सारा दिन यानि समस्त कार्यव्यवहार करते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार मन ही मन, गाते-गुनगुनाते जाओः-

सर्व हूं अज पता लगा, सर्व विच व्यापक हूं।
हो हो हो हो, सर्व विच व्यापक हूं।
दिसदा हूं वसदा हूं,
खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूं।।
सर्व हूं सर्वत्र हूं, सर्व विच ही जापत हूं।
हो हो हो हो, सर्व विच ही जापत हूं।
सर्व मैं हूं मैं हूं सर्व, सर्व सर्व प्रकाश हूं।
हो हो हो हो, सर्व सर्व प्रकाश हूं।

दिसदा हूं वसदा हूं,
खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूं।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, चतुर्थ सोपान,
कीर्तन न0 3)

इस तरह प्रसन्नचित्तता के भाव में आकर, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जानो कि जो प्रकाश या स्वरूप मन-मन्दिर में है, वही स्वरूप मेरा बाहर हर एक में भी है और वही मेरी असलियत है अर्थात् यह सारा प्रतिबिम्ब मेरा ही है। इसी प्रतिबिम्ब को हर एक में देखना है, जनचर बनचर में वही है, जड़ चेतन में उसी का प्रकाश है। यही असलियत मेरा ब्रह्म स्वरूप है। इस संदर्भ में याद रखो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा है:-

वृत्ति है जे एहो कमाल वृत्ति है
जे एहो विशाल
एहो कोई मुश्किल फड़दा विरला
कोई धारण करदा।

जेहड़ा देखो सजनों मन मन्दिर
प्रकाश ओही ब्रह्म स्वरूप है अपना आप

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, बुधवार का पहला बोर्ड)

सजनों यही यथार्थ बोध ही ज्ञान और दर्शन की सार्थकता है। इसी से हृदय निहित समभाव उजागर होता है यानि भक्ति का सच्चा स्वरूप प्रगट होता है और सहज ही प्रत्येक प्राणी के प्रति, आत्मवत् दृष्टि यानि समदृष्टि हो जाती है। कहने का आशय यह है कि इसी तरह इंसान अपनी आत्मा की अजरता-अमरता की पहचान कर, अटलता से हर हालत में एक रस बना रह पाता है और विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था पर डटा रह, युगों से चले आ रहे संकल्प के रोने-झुखने पर फ़तह पा आवागमन से मुक्त हो जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आप भी, इस कुदरती युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, एक आत्मा के भाव का अपने हृदय में विस्तार कर,

सृष्टि के इस आदि-अनादि-परमादि सत्य को जान जाओ कि :-

'सर्व सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है।

फिर ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है
और रूप रंग रेखा से बाहर है'।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न0 30)

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निमलिखित लिंक
(QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं ।

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695

Email: contact@dhyankaksh.org

Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2